प्रस्तुत अध्ययनों में उन विशिष्ट पुरूषों का चरित्र-चित्रण वर्णित है, जिन्होंने अपनी धर्म साधना के द्वारा मरण कर अनुत्तर स्वर्ग के विमानों में जन्म ग्रहण किया है। इसमें यह भी बतलाया गया है कि अनुत्तर स्वर्ग के विमानों में रहने वाले देवों को एक बार मनुष्य जन्म प्राप्त करते ही निर्वाण प्राप्त हो जाता है।

10. प्रश्न व्याकरण : (पण्ह वागरणाइं) :

इस श्रुतांग में 2 (दो) खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में पांच आस्रव द्वारों का कथन किया गया है। दूसरे खण्ड में पांच संवर द्वारों का वर्णन किया गया है। आस्त्रव द्वारों में हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील एवं परिग्रह रूप पांच पापों का तथा संवर द्वारों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह आदि पांच महाव्रतों का विवेचन किया गया है।

11. विपाकश्रुतं (विवागसुयं) :

इस श्रुतांग में 2 (दो) खण्ड हैं। प्रथम श्रुतस्कंध में दस (10) अध्ययन और द्वितीय श्रुतस्कंध में दस (10) अध्ययन हैं।

प्रथम श्रुतस्कंध के 10 अध्ययनों में दुःख-विपाक अशुभ कर्मों के फल को दिखाने के लिए मृगापुत्र, उज्झिय, अभग्गसेन, शकर, बृहस्पतिदत्त, नन्दिषेण, उम्बरदत्त, सोरियदत्त, देवदत्ता और अजदेवी की जीवन गाथाएँ उल्लिखित हैं।

द्वितीय श्रुत स्कंध के 10 (दस) अध्ययनों में सुबाहु, भद्रनन्दी, महाचन्द्र और वरदत्त की जीवन कथाएँ वर्णित हैं।

इस प्रकार, इसमें कुल 20 (बीस) कथाएँ संकलित हैं। अतः यह कर्म सिद्धांत का अत्यंत सुन्दर विवेचक ग्रन्थ है।

Scanned by CamScanner

12. दृष्टिवाद (दिट्ठिवाद):

श्वेताम्बर जैन मतानुसार यह श्रुतांग लुप्त हो गया है, परन्तु दिगम्बर मत इससे सहमत नहीं है। दिगम्बर मतानुसार यह दो अनुयोगों में विभक्त है: (1) प्रथमानुयोग और (2) गण्डिकानुयोग।

प्रथमानुयोग में तीर्थंकर जैसे महान पुरूषों के चरितों का उल्लेख किया गया है और उनके गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण पंच कल्याणकों आदि का वर्णन किया गया है।

द्वितीय गण्डिकानुयोग में कुलकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव आदि का वर्णन किया गया है।

इस प्रकार, निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है, कि अर्धमागधी भाषा में रचित समस्त अंग आगम साहित्य का विशेष महत्त्व है, क्योंकि यह जैन दर्शन एवं साहित्य का मूल ग्रन्थ है, जिसके माध्यम से मुनिगण जीवन के चरम लक्ष्य आध्यात्मिक सुखों को प्राप्त कर मोक्षगामी हो जाते हैं। अत: श्रमण और श्रावक के आचार, विचार, व्यवहार एवम् तप साधना की दृष्टि से यह ग्रन्थ सर्वथा उपयोगी है।

Scanned by CamScanner